

ईदे ग़दीर

बिन्ते ज़हरा नक़वी 'नदल हिन्दी'

सुन चुके हैं लोग पैग़ामे ग़दीर
क्या अजब हैं सुबह और शामे ग़दीर
मा हसल तबलीग़ का पूरा हुआ
अर्श रुतबा, फ़र्श पर बैठे हैं आज
हर तरफ़ सुनते हैं बख़्ख़न की सदा
ले चले हुज्जाज बहरे अक़रेबा
मन्ज़िले अनवार है मदफ़न, 'नदा'

चल रहे हैं बज़्म में जामे ग़दीर
रौनके आलम हैं अय्यामे ग़दीर
आज कल है दीन, इस्लामे ग़दीर
कम से कम इतना है इकरामे ग़दीर
हैं ज़बानें ज़ेरे अहकामे ग़दीर
तोहफ़-ए-तबरीको पैग़ामे ग़दीर
मरते ही पाया ये इनामे ग़दीर

मद्हे इमामे रिज़ा

कौन आया ये क्यों खुशी है बहुत
एक अली^{अ०} आ गया अली^{अ०} के घर
देख कर ख़ान-ए-अली^{अ०} में खुशी
चाँद काज़िम के घर में उतरा है
बे-अमल को घड़ी की क़द्र नहीं
इस जहाँ में ख़ुदारसी के लिए
वादि-ए-मदह में पड़े हैं हुजूर
चलिए-चलिए रज़ा^{अ०} की चौखट पर
उनका एहसान कल भी था बेहद
हम को जन्नत की फ़िक्र कुछ भी नहीं
बुलबुले गुलशने मनाक़िब हूँ
वक़््त की क़द्र जान लो जो 'नदा'

क्या मदीने में रौशनी है बहुत
ये ख़बर आम हो गई है बहुत
काबतुल्लाह को ख़ुशी है बहुत
इसलिए आज चाँदनी है बहुत
बा-अमल को घड़ी-घड़ी है बहुत
सच यही है कि ख़ुदरसी है बहुत
लग रहा है कि आज पी है बहुत
इल्मो इरफ़ाँ की तश्नगी है बहुत
उनका एहसान आज भी है बहुत
हम को मौला तेरी गली है बहुत
मुझको बस गुलशने अली^{अ०} है बहुत
चार दिन की ये ज़िन्दगी है बहुत